अध्याय – 5

"शरद जोशी के नाटकों में व्यंग्य निर्मिति में सहायक नाट्यतत्व"

==========

अध्याय – 5

"शरद जोशी के नाटकों में व्यंग्य निर्मिति में सहायक नाट्यतत्व"

==========

भूमिका :–

नाटक बहुआयामी विधा है। नाटक में वस्तुतत्व के साथ ही साथ शिल्प और मंचीय तत्व का भी निर्वाह होता है। शरद जोशी के नाटकों में जहाँ राजनीतिक और सामाजिक व्यंग्य के विविध रूप नजर आते हैं, वहाँ यह भी महत्त्वपूर्ण है कि नाटकों में व्यंग्य निर्मिति में सहायक नाट्यतत्वों पर भी विचार करना आवश्यक है। इस दृष्टि से नाटक के शिल्प विधान और मंचीय विधान का महत्व हैं। ये दोनों तत्व नाट्यकला को उजागर करने में सहायक होते हैं। नाटक का शिल्प पक्ष जितना महत्वपूर्ण है उतना ही उसका रंगमंचीय पक्ष भी महत्त्वपूर्ण हैं। ये दोनों पक्ष शरद जोशी के नाटकों में व्यंग्य निर्मिति में सहायक बने हैं। अतः इतन पर विचार, विवेचन, विश्लेषण करना इस अध्याय का मुख्य प्रतिपाद्य है।

शिल्पतत्व :–

शिल्प शब्दप्रयोग अंग्रेजी के टैकनिक शब्द का हिंदी रूपांतरण है। शिल्प का सामान्य अर्थ है कारीगरी । नाटककार की यह कारीगरी मुख्यतया नाटक का कथ्य, नाटक के पात्र और उनके चरित्र–चित्रण की विधि, भाषा, संवाद, शब्दविन्यास, कहावतें, मुहावरे, प्रतीकात्मकता शीर्षक आदि के अभिनव प्रयोग आदि में दृष्टिगोचर होती है।

उलजलूल संवाद :–

शरद जोशी के दोनो व्यंग्य नाटकों में उलजलूल संवाद संवादों को भी स्थान मिला है। मानव जीवन में विसंगतियाँ होती हैं। इन विसंगतियों को उभारने और व्यंग्य निर्मिति के लिए इस प्रकार की संवाद योजना की गई है। निम्नलिखित संवाद देखिए –

"अंधा – 1 : ड्रायवर ।

अंधी : आया ।

अंधी – 2 : बैरा ।

अंधा – 3 : चपरासी ।

अंधा – 4 : खानसामा ।

अंधा – 1 : बाबू ।

अंधा – 4 : नर्स ।

अंधी : डाक्टर ।

अंधा – 1 : बाबू ।

अंधी : डियर ।

अंधा – 4 : बैरा ।

अंधा – 3 : ड्रायवर ।

अंधी : डीयर ।

अंधा – 4 : बैरा ।

अंधा – 1 : डार्लिंग ।"[1]

इसमें संदेह नहीं कि अंधे भी वास्तव में मानव हैं और मानव की संवेदनशीलता, मनोभावाभिव्यक्ति और विसंगति का त्रिवेणी संगम लाजवाब है। अन्य उदाहरण देखिए –

"सूत्रधार : .... कुछ समय नहीं आता और ये अंधे, कम्बख्त कुछ नहीं कर रहे।

अंधा – 1 : मेरा डनलापिलो का तकिया कहाँ है ?

अंधा – 2 : इम्पोर्टेड हिस्की है, पीओगे ?

अंधा – 3 : नहीं आज मैं आत्मसुधार के लिए अनशन कर रहा हूँ।

अंधा – 4 : आओना, क्या देर है ?

अंधी : आ रही हूँ ना, तुम बहुत जल्दी मचाते हो ?"[2]

सूत्रधार की टिपणी पर पाँच अंधों की जीवन विषयक विसंगति बड़ी ही मार्मिक ओर व्यंग्यपूर्ण है।

पात्रसमूह संवाद :-

किसी भी नाटक में पात्रों का समूह होता ही है। पूराने-जमाने में एक पात्र के बाद दूसरे पात्र का संवाद प्राय: दिखाई देता है। लेकिन साठोत्तर नाटकों में पात्रसमूह संवाद की शैली प्रचुर मात्रा में दिखाई पड़ती है। रंगमंच पर तीन-चार पात्र एक साथ संवाद बोलते हैं। जो मुख्यतया प्रासंगिक और व्यंग्यनिर्मिति में सहायक होते हैं। कुछ संवाद देखिए -

"नवाब : फिर भीड़ क्यों थी ?

कोतवाल : पूछने पर पता लगा, अलादाद खाँ का इंतकाल हो गया।

चिंतक - 1 :
चिंतक - 2 :
चिंतक - 3 : } ऐं. ... कब ? अलादाद खाँ साहब गुजर गये।[3]

इस संवाद के माध्यम से व्यंग्य के साथ हास्य निर्मिति भी प्रतीत होती है। नाटककार ने हाथी की परिभाषा के बारे में भी हास्यव्यंग्यनिर्मिति की अभिव्यक्त की है और पात्र समूह संवाद का प्रयोग किया है। निम्नलिखित संवाद देखिए -

"अंधा - 1 :
अंधा - 2 :
अंधा - 3:
अंधा - 4 : } हाथी क्या है ?"[4]

शब्द-युग्म संवाद :-

नाटककार शरद जोशी ने कलाकारों पर विशेषत: नाट्यकर्मियों पर व्यंग्य करते समय शब्द-युग्म संवाद शैली का प्रयोग किया है, जिससे व्यंग्य और हास्यनिर्मिति आप ही आप हो जाती है।

"नवाब : थिएटरवला ? यह क्या चीज है?

कोतवाल : बहुत खतरनाक शख्स है हुजूर । रंगकर्मी। जिसे कहते हैं नाटकों का सूत्रधार ...

नवाब : खतरनाक है तो साले को मारो जूते ।

कोतवाल : इतनी इज्जत के काबिन नहीं है मालिक । कलाकार है, ड्रामे–फ्रामे करता है, थोड़ा इनाम–इकराम दे दीजिए तो आप के गुण गायेगा ।

नवाब : ड्रामें ? यानी लैला–मजनूँ, शीरीं–फरहाद । चलो हटों, हम ऐसे लोगों से दूर ही रहते हैं।

कोतवाल : जैसा ठीक समझें । मरने दो साले को।"[5]

संवाद में संवाद :–

नाटककार शरद जोशी ने "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में कहीं–कहीं डायरेक्ट संवाद शैली का प्रयोग न करके संवाद में संवाद शैली जैसे महत्त्वपूर्ण शैली का प्रयोग किया है, जिससे व्यंग्य और हास्यनिर्मिति होने में मदद हुई है। निम्नलिखित पंक्तियाँ देखिए –

"अलादाद खाँ : ..... हर किसम का शौक रखते हैं जनाब। कल कहने लगे, जीजा हिस्की हो जाये। मैंने कहा देखो मियाँ, अलादाद खाँ ने जिन्दगी में न शराब हुई है और न कभी छुएँगे । आपको पीना हो, तो जाइए किती अड्डे पर और शौक से पीजिए ।"[6]

छोटे संवाद :–

वस्तुतः नाटक में छोटे संवादों का होना अधिक उपयुक्त है। छोटे–छोटे संवादों के द्वारा नाटक में पात्रों को अभिनय के लिए ज्यादा गुंजाइश रहती है। कुछ संवाद देखिए –

"कोतवाल : अलादाद खाँ ।

नवाब : काफी भीड़ जमा थी ?

कोतवाल : जी हाँ ।

नवाब : लोग रो रहे थे ?

कोतवाल : जी ।

नवाब : तुम भी रोये होगे ?

कोतवाल : चेहरे को उदास बना लिया था।"[7]

अन्य उदाहरण देखिए –

"अंधा – 1 : पाँच मिनिट ? तीन मिनट काफी हैं।

अंधा – 4 : सिर्फ एक मिनट ।

अंधा – 3 : अच्छा दो मिनट ।

अंधा – 2 : ठीक है दो मिनट ।"[8]

लंबे संवाद :–

नाटककार ने लंबे संवादों का उपयोग मुख्यतया प्रासंगिक रूप में किया है और उनके माध्यम से व्यंग्य की निर्मिति भी हुई है। "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में नवाब साहब के संवाद एक पृष्ठ से दो या तीन पृष्ठों तक लंबे हैं। नवाब का एक भाषण पृ.40, 41, 42 पृष्ठ कर अंकित है। नागरिकों को की गई अपील पर नवाब का भाषण पृ.51, 52, पर अंकित हैं। उसी प्रकार 'अंधों का हाथी' नाटक में सूत्रधार का नाटक के प्रारंभ में प्रथम अंक के प्रथम दृश्य में किया गया प्रास्ताविक पृ.79, 80 पर अंकित है। ये लंबे संवाद हास्य और व्यंग्य निर्मिति में भी और सहायक हुए हैं।

पुनरूक्तिपरक संवाद :–

"अंधो का हाथी" नाटक में सूत्रधार के इंतजार में अंधों की उत्सुकता सूत्रधार के मंच पर प्रवेश करने पर मुख्यतया "नमस्ते" शब्द के पुनरावृत्ति से दृष्टिगोचर होती है। और दर्शक भी हास्य करते हैं। निम्नलिखित संवाद देखिए –

"अंधा – 1 : सूत्रधारजी आ गये ।

अंधी : सूत्रधारजी आ गये ।

अंधा – 4, और अंधा – 2 : नमस्ते सूत्रधारजी ।

अंधा – 1
और
अंधा – 3 } :– नमस्ते सूत्रधारजी ।

अंधी : नमस्ते ।

सूत्रधार : नमस्ते, नमस्ते ।"[9]

दरबारी भाषा :–

"एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में नवाब के दरबारी वातावरण का चित्र बड़े ही मार्मिक शब्दों में अंकित किया गया है। दरबारी वातावरण को प्रभावित करने में स्वयं नवाब, कोतवाल, तीन चिंतक ओर चार दरबारी मुख्य हैं। इस नाटक में नाटककार ने दरबारी भाषा का बड़ा ही सुंदर प्रयोग किया है। जब नवाब और कोतवाल रास्ते से आगे बढ़ते हैं तब दरबारी नवाब के राज का जो गुणगान करते हैं वह उनकी दरबारी भाषा का व्यंग्यात्मक चित्रण है। निम्नलिखित वार्तालाप देखिए –

"दरबारी – 1 : नवाब की सल्तनत में चारों तरफ अमन है।

शेष दरबारी : नवाब की सल्तनत में चारों तरफ अमन है।

दरबारी – 2 : नवाब के राज में सब सुखी हैं।

शेष दरबारी : नवाब के राज में सब सुखी हैं।

दरबारी – 3 : सब सुखी है, सब अमन से हैं।

शेष दरबारी : सब सुखी है, सब अमन से हैं।

दरबारी – 3 : चारों ओर कानून का पहारा है।

शेष दरबारी : चारों ओर कानून का पहारा है।"[10]

वस्तुतः नवाब के राज में जनता न सुखी है न शांत हैं। बल्कि हर जगह कानून का पहरा लगा रहा है। यही व्यंग्य है और यही हास्यनिर्मिति का स्थल भी है।

गालीगलौच भाषा :-

व्यंग्य निर्मिति में गालीगलौच की भाषा का भी प्रयोग किया जाता है। गाली गलौच की भाषा में डॉ.श्यामसुंदर घोष के विचार महत्वपूर्ण है। "व्यंग्य-भाषा में ग्राम्य प्रयोगों, स्लैगों और गालियों का भी एक निश्चित अनुपात होता है क्योंकि इसके बिना उसका काम नहीं चलता। गाली आखिर क्या ? यह भाषा में हमारा क्रोध, घृणा, वैर, जुगुत्सा ही तो है। इसलिए गालियों का एक-एक शब्द सामान्य भाषा के शब्दों से ज्यादा कारगर और व्यंजक होता है। कोई पात्र जब ठस्से के साथ "स्साला" कहता है तो इस एक शब्द से वह इतना कुछ कह देता है कि उसे पैराग्राफ लिखने की जरूरत नहीं होती।"[11] गालीगलौच भाषा का प्रयोग समाज सुधार के लिए विशेष परिणाम करनेवाला होता है। समाज पर उसका असर महत्वपूर्ण होता है। "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में नवाब कोतवाल और चिंतकों को "उल्लू के पठ्ठे" बार-बार कहते हैं। इस नाटक में "साले" शब्द का भी प्रयोग तीन-चार बार किया है। "अंधो का हाथी" नाटक में गाली-गलौच का विक्रम दिखाई देता है। पाँचों अंधे एक-दूसरे को गाली देकर मानों एक दूसरे का उध्दार ही करते हैं। निम्नलिखित पंक्तियाँ देखिऐ-

"अंधा - 1 : उल्लू के पठ्ठे ।

अंधा - 2 : मूर्ख, नास्मझ ।

अंधा - 1 : व्यक्तिवादी ।

अंधा - 2 : सिध्दांतवादी ।

अंधा - 1 : गुण्डे ।

अंधा - 2 : बदमाश, धोखेबाज ।"[12]

तार्किक भाषा :-

जब अलादाद खाँ नामक शरीफ आदमी को कोतवाल पकड़ता है ओर नवाब के पास ले जाता है तब उस अलादाद खाँ के बारे में नागरिक तर्क करते हैं। ये तर्क भी व्यंग्यात्मक भाषा शैली का सबूत है। नागरिक-2 के शब्दों में -

"नागरिक - 2 : होगा कोई घपला साहब, पुलिस ने पकड़ा है तो कोई यूँ तो नहीं पकड़ा

होगा। जरूर कोई बात होगी।[13]

कैफियत की भाषा :-

जिस प्रकार अदालत में वकील या मुजरिम कैफियत की भाषा का प्रयोग करता है उसी प्रकार नवाब के शाही दरबार में अपने प्राण बचाने के लिए अलादाद खाँ नामक शरीफ आदमी कैफियत की भाषा का प्रयोग करता है। कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं –

"अलादाद खाँ : मैं हमेशा बायें से चलता हूँ। क्यू में खड़ा रहता हूँ। सिपाही के हुक्म को कानून मानता हूँ । टैक्स चुकाता हूँ। रात के बाद घर से नहीं निकलता, बिना एप्लिकेशन कभी दफ्तर से जाता नहीं, माता – मलेरिया की रपट लिखाता हूँ। मर्दुमशुमारी में नाम देना नहीं भूलता, वोट डालता हूँ। पड़ोसियों की मौका – मुसीबत मदद करता हूँ।"[14]

आकाशवाणी भाषा :-

जिस प्रकार आकाशवाणी पर हम आँखों देखा हाल किसी निवेदक या निवेदिका द्वारा सुनते हैं उसी प्रकार "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में उद्घोषक के माध्यम से शरीफ अलादाद खाँ की शवयात्रा के बारे में आँखों देखा हाल की पूर्वनियोजित सूचना सुनते हैं।

"सूत्रधार : जैसा कि मैं यहाँ से देख रहा हूँ इस समय आसमान बिलकुल साफ है, लगता है आज बादल भी अलादाद खाँ साहब के देहान्त के शोक में व्याकुल हो कहीं चले गये हैं। मैं देख रहा हूँ कि आज सुबह से ही उस सड़क के दोनों ओर, जहाँ से शव को ले जाया जायेगा, लोगों ने भीड़ लगानी शुरू कर दी है और इस वक्त जैसा कि मैं देख रहा हूँ अच्छी खासी भीड़ जमा है। लोग व्याकुल हैं और वे अपने प्यारे अलादाद खाँ साहब के अंतिम दर्शन करना चाहते हैं। मगर जैसी कि घोषणा आप सुन चुके हैं, फिलहाल अलादाद खाँ साहब की शवयात्रा अपने पूर्व घोषित समय से कुछ देर से आरम्भ होगी क्योंकि हमारे कुछ खास मेहमान जो इस मौके पर तशरीफ ला

रहे हैं खास तौर से शव–यात्रा में भाग लेने के लिए, वे अभी पहुँचे नहीं हैं। उनका हवाई जहाज जल्दी ही उतरनेवाला है और जैसे ही वे तशरीफ ले आयेंगे, अलादाद खाँ साहब के पार्थिव शरीर की अंतिम यात्रा आरम्भ हो सकेगी।"[15]

जनमत :–

"एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में अलादाद खाँ साहब के देहान्त के बारे में लोगों के क्या क्या मत हैं इसे दिखाया हैं। यह जनमत दिखाकर शरद जोशी ने इस नाटक में व्यंग्य और हास्य की निर्मिति की है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है –

"सूत्रधार : नागरिक – 2 से
आप भाई साहब कुछ फरमायेंगे ?

नागरिक – 2 : किस विषय में ?

सूत्रधार : यह जो आज हमने एक रत्न खोया है।

नागरिक – 2 : ऐसा है कि अलादाद खाँ के मरने का अफसोस हमें है मगर साथ ही यह देखकर खुशी हो रही है कि सरकार उनके अंतिम संस्कार पर इतना ध्यान दे रही है। आशा है आगे भी गारमेन्ट इसी तरह गरीबों का खयाल रखेगी।"[16]

सरकारी पत्र भाषा :–

शरद जोशी ने "अंधों का हाथी" नाटक में सरकारी पत्र भाषा शैली का प्रयोग करके व्यंग्य और हास्य निर्मिति की है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है –

"अंधी : आपका पत्र दिनांक फलाँ–फलाँ क्रमांक फलाँ–फलाँ आत्मिक फलाँ–फलाँ के संदर्भ में निवेदन है कि आपके राज्य में हाथी की स्थिति के विषय में जो नोट . . ।

अंधा – 1 : हमने दिनांक फलाँ–फलाँ, क्रमांक फलाँ–फलाँ आब्लिक फलाँ– फलाँ भेजा था। उसके अनुसार हाथी के विषय में पूरी जानकारी हम तभी दे सकते हैं

जब हाथी के विषय में पूरी जानकारी हमें आपसे मिल सके। कृपया लौटती डाक से हमें बतायें कि आपके राज्य में हाथी है, यदि है तो वह कितना है और उसकी प्रगति क्या है, भवदीय आदि आदि।"[17]

तार की भाषा :-

शरद जोशी के "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में नवाब का तार की भाषा में कोतवाल को दिया गया आदेश बड़ा ही व्यंग्यपूर्ण है। निम्नलिखित पंक्तियाँ देखिए –

"नवाब : सूचना गलत । अलादाद आदमी नहीं । अलादाद गधा । रिपी । अलादाद गधा । इज्जत समाप्त । गम्भीर चिन्ता । रिपीट, गम्भीर चिन्ता। कारण । क्यों ? कैसे ? अब क्या होगा ? प्रश्नचिन्ह ? इज्जत बचाना जरूरी । स्टाप । अन्यथा फाँसी । रिपोट फाँसी । रिपीट फाँसी । रिपीट फाँसी । एक्शन । इमीजिएट । टुडे । अरजेन्ट । एमरजेंसी । स्टाप। नवाब ।"[18]

शब्द–तत्व :-

शरद जोशी ने अपने नाटकों में अरबी, फारसी, अंग्रेजी आदि शब्दों का प्रयोग कथ्य और चरित्र–चित्रण विधि को अभिव्यक्त करने के लिए किया है, जो इस प्रकार हैं –

अरबी शब्द प्रयोग :-

शरद जोशी ने अपने नाटकों में कुछ स्थलों पर अरबी शब्दों का प्रयोग किया है। जैसे–

1. एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ : वक्त, वालिद, जनाजा, जाहिल लतीफा, शौक, हुक्म, इज्जत, फर्ज, बेवकूफ, दिक्कत
2. अंधों का हाथी : लापरवाह, कदरदान

फारसी शब्द प्रयोग :-

शरद जोशी के विवेच्य नाटकों में फारसी शब्दों का यत्र–तत्र प्रयोग मिलता है। जैसे

1. एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ : जिस्म, बेवकूफ
2. अंधों का हाथी : लापरवाह, कदरदान, हाजिरान

संस्कृत शब्द प्रयोग :–

शरद जोशी ने नाटकों में कहीं–कहीं संस्कृत शब्दों का प्रयोग किया है ।

1. एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ : नेपथ्य, मंत्र, महामंत्र,

2. अंधों का हाथी : स्त्री, प्रधानमंत्री, कर्म, बुध्द, राष्ट्र

अंग्रेजी शब्द प्रयोग :–

शरद जोशी ने अपने नाटकों में आधुनिक जीवन की विभिन्न स्थितियों को व्यंग्यात्मक रूप में अभिव्यक्त करने के लिए अंग्रेजी शब्दों का भी यत्र–तत्र प्रयोग किया है। जैसे –

1. एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ : कल्चर, डिपार्टमेंट, प्रेक्टिस, मीटिंग, व्हिस्की, गौरमेंट, प्लानिंग फीचर, स्मिगरेट, पैकेट, माचिस, रेडियो, टैक्स, युनिवर्सिटी

2. अंधों का हाथी : पोलटिक्स, पोजीशन, टाइप, आब्लिक, अप्लीकेशन, डनलपियो, इम्पोर्टेड, डीयर, डार्लिंग, डाक्टर, नर्स, फोटो, गेट आउट, कमेटी, फायर

शरद जोशी ने अपने नाटकों में कई स्थलों पर अंग्रेजी वाक्यांशों का प्रयोग भी किया है। निम्नलिखित उदाहरण द्रष्टव्य है –

"अंधा – 1 : डू यू स्मोक हाथी ?

अंधा – 4 : वुड यू लाइक इट नीट आर विद सोडा आरआईस आर समथेंग... ।

अंधी : कमान, गिव मी एक बिग–बिग किस हाथी । मू.... मू... मू... मू....।"[19]

प्रशासनिक शब्दावली :–

नाटककाकर ने "अंधों का हाथी" नाटक में प्रशासनिक भाषा का प्रयोग किया है।

1. अंधों का हाथी : आई.सी.एस., आई.ए.एस., चेअरमैन ऑफ दि बोर्ड ऑफ स्पेशल सेक्रेटरी, डिप्टी सेक्रेटरी, अण्डर सेक्रेटरी, कमिश्नर, डायरेक्टर जनरल, एडवाइजर टू द गवर्नमेण्ट

मुहावरों /कहावतों का प्रयोग :-

शरद जोशी ने अपने दोनों नाटकों में मुहावरों का प्रयोग समय-समय पर किया है। जैसे -

1. एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ : चप्पलें घिसना, मक्खन लगाना, खुदा जब देता है थियेटर फाड़कर देता है, मुँह मोड़ना, आँखों का तारा, नानी मरना, तीर मारना, आग सुलगाना, दुनिया उजड़ जाना, जूते खाना, कलेजे पर पत्थर रखना ।

2. अंधों का हाथी : मुँह लगाना

प्रतीक-विधान :-

शरद जोशी के दोनों व्यंग्य नाटकों के शीर्षक प्रतीकात्मक हैं। विशेष बात यह है कि दोनों नाटकों के शीर्षक पशु-प्रतीक हैं। "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" शीर्षक में "गधा" शब्द प्रयोग पशु- प्रतीकात्मक है। जुग्गन धोबी के गधे का नाम अलादाद खाँ है। यहाँ गधे का शीर्षक उपरोधिक है, व्यंग्यात्मक है। साथ ही अलादाद खाँ एक शरीफ आदमी का नाम है। लेकिन नवाब और उसकी सरकार उस शरीफ आदमी को बलि का बकरा बना देते हैं। नवाब के कहने पर कोतवाल उसे पकडकर जल्लाद के पास ले जाता है और उसकी हत्या करवाता है। मनुष्य का शरीफ बनना गधा जैसा है, मूर्खता है। इस नाटक में नवाब आत्मप्रशंसक और जनता के शोषक का प्रतीक है। कोतवाल अपनी ड्युटी समय पर न करनेवाला सुविधा भोगी, रिश्वतखोर, सरकारी नौकर हे। चिंतक स्वार्थी ओर अवसरवादी के प्रतीक हैं। जुग्गन धोबी अलादाद खाँ की मृत्यु पर गधे का नामोललेख नहीं करता है ओर आखिर गधे के मरने पर नवाब साहब से पाँच हजार रूपये का मुआवजा प्राप्त कर अपना उल्लू सीधा करता है। जुग्गन ढोंगी और मतलबी जनता का प्रतीक है।

"अंधों का हाथी" नटक के शीर्षक में "हाथी" शब्दप्रयोग प्रतीकात्मक है। हाथी पशु-प्रतीक है और राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय समस्याओं का प्रतीक है। चार अंधे आज-कल के

स्वार्थी, अवसरवादी नेताओं के प्रतीक हैं। उनकी नेतागीरी पूरी तरह से अंधी हैं। और अंधी आधुनिक नारी नेता की प्रतीक है। वह भी अंधी नेतागीरी की प्रतीक है। सूत्रधार समस्याओं का उद्‌गाता और विश्वरूपी मंच के सूत्रधार का प्रतीक है जो कभी मरता नहीं। मारने पर भी पुनरूज्जीवित होता है।

बिंब विधान :-

शरद जोशी के विवेच्च दोनों नाटकों में कई स्थान पर विशेषतः गीत रचना में कई बिंब सहज ही उभर आए हैं।

"एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में कोतवाल की प्रेयसी रामकली है। एक स्थल पर दर्शाया गया है कि रामकली कोतवाल को साफा पहनाती है तब कोरस गीत में उसके मनवा का (कोतवाल) जो वर्णन किया गया है उसमें चाक्षुष बिंब की प्रतीति होती है। कुछ पंक्तियाँ देखिए –

" सैय्या बेदर्दी, खाकी वर्दी, हाथ में डण्डा सोहे
बाँके साफे की धज ऐसी हमरा मनवा मोहे '
जिधर से गुजरे आशिक हमरो, आ जाये भूचाल
देखो चले कोतवाल सँवर के ---- "[20]

"अंधों का हाथी" नाटक में एक लंबे गीत में अंधों के माध्यम से आज की सब प्रकार की जनता पर व्यंग्यबाण छोडने में गीतकार कामयाब हुआ है और जनता के काले धंदे पर जो प्रकाश डाला गया है उससे चाक्षुष बिंब की प्रतीति आप ही आप होती है। गीत की निम्नांकित पंक्तियाँ देखिए –

"अंधे
हम हैं अंधे
देख रही है सारी दुनिया
बाबू, बीबी, मुन्ना, मुनिया
हल्दी, मिर्ची, जीरा, धनिया

नेता, अफसर, बामन, बनिया

अंदर काले धंधे।"[21]

शैलीतत्व :-

"शरद जोशी ने अपने दोनों नाटकों में विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया है। कुछ शैली . भेद इस प्रकार हैं।

आत्मकथन शैली :-

नाटककार ने "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में आत्मकथन शैली प्रयोग किया है। जब कोतवाल अलादाद खाँ से कहता है कि तुम्हारी हमें सख्त तलाश थी। तब अलादाद खाँ घबरा जाते हैं और कहते है कि क्या किया है मैंने जो पुलिस मुझे तलाश करेगी, यह कहकर शरीफ अलादाद खाँ नामक आदमी अपनी खुद की जानकारी देता है। अलादाद खाँ कहते हैं वक्त से इनकम टैक्स जमा करता हूँ। रेडियो का लायसेंस है मेरे पास, नल और बिजली के बिल बराबर चुकाता हूँ। पड़ोसियों से झगड़ा नहीं, नौकरी ठीक और ईमानदारी सेक करता हूँ । बीवी का कहना मानता हूँ। किसी पोलिटिकल पार्टी का मेंम्बर नहीं...।"[22]

इतिवृत्तात्मक शैली :-

शरद जोशी ने "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में इतिवृत्तात्मक शैली का भी प्रयोग किया है।

"देवीलाल : मेरे यहाँ एक साहब पान खाने तशरीफ लाते हैं जिनका नाम है अलादाद खाँ। उन नाटकवाले साहब ने उन्हें कह दिया, अजी आप जिन्दा है, जुग्गन धोबी तो सुबह से आपके ही नाम पर रो रहा है। समझ रहा है आपका इन्तकाल हो गया।

नागरिक – 4 : फिर अलादाद खाँ साहब क्या बोले ?

देवीलाल : बहुत बिगडे । कहने लगे, इस शहर में एक–से–एक छँटे हुए बदमाश रहते हैं।"[23]

चित्रात्मक शैली :–

नाटककार ने "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में चित्रात्मक शैली का प्रयोग किया है। रामकली नारी पात्र के संवाद के द्वारा यह स्पष्ट है –

"रामकली : करारा बदन, मर्दाना चेहरा, ये रौबदाद मूँछे । तुम क्यों डरों हो जी किसी से?

कोतवाल : यह नहीं, दूसरी बात है। दरबार में कवित्त, सायरी, वेदज्ञान की किताबी बहसें चलती रहती हैं।"[24]

सूक्ति शैली :–

"एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में जब एक प्रसंग में अलादाद खाँ नामक शरीफ आदमी मरने के लिए तैयार नहीं होता तब चिंतक – 1 और चिंतक – 2 इन दोनों के संवादों के माध्यम से शरद जोशी ने सूक्ति शैली का प्रयोग किया है।

"चिंतक – 1 : व्यक्ति का जीवन राष्ट्र के लिए होता है, राष्ट्र व्यक्ति के लिए नहीं।

चिंतक – 2 : पूर्ण समर्पण और तन–मध–धन से सब कुछ भूलकर की गयी सेवा मनुष्य को महान बना देती है।"[25]

गणितीय भाषा शैली :–

"अंधों का हाथी" नाटक में जब चारों अंधों को "हाथी क्या है" यह समस्या निर्माण होती है, तो इन्हीं चारों अंधों के संवादों से नाटककार ने इस नाटक में गणितीय शैली की निर्मिति की है।

"अंधा – 1 : हाथी दो अक्षरों से मिलकर बना है, हा और थी।

अंधा – 2
अंधा – 3 } : हा और थी।
अंधा – 4 : बराबर हाथी।"[26]

विस्मयादिबोधक शैली :-

"एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में जब नवाब साहब एक शरीफ आदमी "अलादाद खाँ" की शवयात्रा में शामिल होकर खुद शव को कंधा देते हैं तो नागरिकों के संवादों द्वारा नाटककार ने विस्मयादिबोधक शैली का प्रयोग किया है।

"नागरिक – 1 : नवाब साहब खुद कंधा दे रहे हैं।

नागरिक – 2 : नवाब सहब ..... खुद ?

नागरिक – 3 : नवाब साहब ..... देखो–देखो वो रहे नवाब साहब !

नागरिक – 4 : कहाँ – कहाँ, मुझे देखने दो .... वाकई !"[27]

संबोधन शैली :-

"अंधों का हाथी" नाटक में जब चार अंधे और एक अंधी के सामने सूत्रधारजी हाथी को सम्मुख लाने का बहाना करते हैं तब ये अंधे अपनी जिम्मेदारियाँ नहीं संभालते हैं, तब सूत्रधारजी के संवाद से नाटककार ने संबोधन शैली का सुंदर प्रयोग किया है। सूत्रधारजी कहते हैं, "अरे राष्ट्र के अंधो, उठो। तुम जो भी हो मंत्री, सचिव, संचालक, बाबू या चपरासी, जो भी हो चाचा, भतीजे, ससुर या भानजे, जो भी हो ब्राह्मण, क्षत्रिय, सूद्र, बनिया या आदिवासी, जो भी हो पात्र, दर्शक, आलोचक, टिकिट बेचनेवाले या पर्दा खींचनेवाले, उठो और बहुत देर से चल रहे इस नाटक को खत्म करो। इसके पहले कि यह हाथी तुम्हें कुचलने लगे तुम इसे अपने वश में करो। कोई सुन रहा है मेरी बात।"[28]

प्रश्नार्थक शैली :-

"एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में जब सूत्रधार और देवीलाल पानवाला जुग्गन नामक धोबी को अलादाद .... ओ अलादाद खाँ कहते रोते हुए देखते हैं। तब सूत्रधार और देवीलाल पात्र के माध्यम से नाटककार ने प्रश्नार्थक शैली का प्रयोग किया है।

"सूत्रधार : क्यों भाई, इस जुग्गन धोबी को क्या हुआ ?

देवीलाल : लगता है कोई रिश्तेवाला मर गया। पान लेंगे ?

सूत्रधार : ये अलादाद खाँ कौन है जिसके नाम पर रो रहा है?

देवीलाल : कोई रिश्तेदार होगा या ग्राहक होगा ? ये धोबी कम्बख्त सभी के कपड़े तो धोते रहते हैं। पान लेंगे ?[29]

श्रध्दांजली :-

"एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में नवाब साहब अलादाद खाँ नामक शरीफ आदमी की स्वंय हत्या करवाते हैं और उसकी मौत के प्रति बड़ी जोशिली श्रध्दांजली अर्पित करते हैं।

"नवाब : कितनी पवित्र है यह जमीन जहाँ हमारे शहर का सबसे महान नागरिक अलादाद खाँ रहता था। वह जो हमेशा बायें से चला, क्यूं में खड़ा रहा, सिपाही के हुक्म को जिसने कानून माना, टैक्स बराबर चुकाया, रात के बाद जो घर से नहीं निकला, मर्दुमशुमारी में जिसका नाम हमेशा रहा, जिसने हर चुनाव में वोट डाले और मौका मुसीबत अपने पड़ोसियों की मदद की। जब भी जंग हुई अलादाद खाँ ने बराबर चन्दा दिया, ब्लड बैंक का मेम्बर रहा और खबर मिलने पर फौरन वहाँ गया। . ."[30]

वस्तुतः मृत व्यक्ति के प्रति उसके कार्य के प्रति, हमदर्दी दिखाने के लिए श्रध्दांजली अर्पित की जाती है। लेकिन शरद जोशी के विवेच्य नाटकों में नवाब द्वारा अलादाद खाँ को तथा "अंधों का हाथी" नाटक में अंधी के द्वारा सूत्रधार को अर्पित की गयी श्रध्दांजली आज के राजनीतिक या अन्य नेताओं द्वारा अर्पित की गयी उपहासात्मक श्रध्दांजली हैं।

"अंधों का हाथी" नाटक में अंधी नारी नेता के रूप में सूत्रधार को श्रध्दांजली अर्पित करती है

"सूत्रधारजी नहीं रहे। यह हमारे लिए हार्दिक शोक और सन्ताप का दिन है, जब राष्ट्र ने महान प्रतिभाशाली और कर्मठ नेता खो दिया। सूत्रधारजी महान साधक, तपस्वी ओर सिध्दान्तवादी थे। हाथी की समस्या की ओर समाज का ध्यान आकर्षित कर सूत्रधारजी ने जो सेवा की है वह भुलायी नहीं जा सकेगी। उनका नाम इतिहास

में सदैव अमर रहेगा । ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति दे। हम पाँच मिनट मौन रहकर ... ।"[31]

गीत–रचना :–

कोरस गीत :–

नाटकाकर शरद जोशी के "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में छह कोरस गाये गए हैं जिनकी रचना सूर्यभानु गुप्त ने की है। पहला कोरस गीत मुख्यतया बाजार में प्रवेश करनेवाले नवाब पर लिखा गया हैं जिसमें नवाब के आने की घोषणा का स्वागत और उनके चमचों पर व्यंग्य किया गया है। दूसरा कोरस गीत जुग्गन धोबी के अलादाद खाँ नामक गधे की मृत्यु पर उसकी प्रशंसा के लिए लिखा गया है। इस कोरस गीत में संबोधन शैली का प्रयोग किया गया है। लगता है अलादाद गधे के लिए मानोयह श्रध्दांजलि ही है। कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं –

"अलादाद ! ओ अलादाद !
दुनिया को तुम छोड़
कहाँ चले गये ?
अलादाद ।"[32]

तीसरे कोरस गीत में रामकली द्वारा कोतवाल को साफा पहनते समय कोतवाल की व्यक्तिरेखा पर प्रकाश डाला गया है। तत्पश्चात अगले कोरस गीत में गधे की मौत पर जुग्गन धोबी की दुखद स्थिति को चित्रित किया गया है। पाँचवे कोरस में दरबार के दृश्य में नवाब के बेहिसाब आने पर व्यंग्य है। छठे कोरस गीत में नवाब के अधीन शहर का वर्णन किया गया है। इस शहर को अंधा शहर कहा गया है और इस शहर में हसना, रोना, सबकुछ लाचारी ही लाचारी है। कुछ व्यंग्यपरक पंक्तियाँ देखिए –

"ये अंधा शहर है अंधा शहर
इस अंधे शहर का क्या कहना
हँसना भी यहाँ लाचारी है

रोना भी यहाँ लाचारी है
हँसने–रोने के बीच कहीं
होना भी यहाँ लाचारी है
लाचारी है जीवन का सफर
जीवन के सफर का क्या कहना ।"[33]

नाटक के अंतिम कोरस गीत में यह विशेषता है कि जुग्गन धोबी के गधे की मौत पर जो गीत पहले गाया गया है वह अब अलादाद खाँ की हत्या पर गाया गया है। निम्नांकित पंक्तियाँ देखिए –

"अलादाद ओ अलादाद ।
दुनिया को तुम छोड़
कहाँ चले गये ?
अलादाद ।"[34]

इस गीत के साथ ही अलादाद खाँ की शवयात्रा आरंभ होती है। मानव जीवन की विसंगति का इससे और सुंदर उदाहरण क्या हो सकता है।

गीत :–

"अंधों का हाथी" नाटक में मुख्यतया तीन गीत हैं। विशेष बात यह है कि गीत मंच पर पाँच अंधे मिलकर गाते हैं। एक गीत में दिखाया गया है कि ये अंधे हाथी की खोज में अपने स्वार्थ को ही उजागर करते हैं।

"अंधे
हम हैं अंधे
तलाश रहे हैं अपना हाथी
एक स्वार्थ के हम सब साथी" [35]

नाटक के एक गीत में हाथी के स्वरूप को दर्शाने का प्रयास नाटककार ने किया है। हाथी के पैर, उसकी सूँड, उसका खाना, उसका वर्ण आदि का उल्लेख किया गया है। अंधे देख नहीं

सकते हैं। लेकिन उसके स्वरूप का अनुमान करते हैं। गीत की प्रारंभिक और अंतिम पंक्तियाँ इस प्रकार हैं --

"हाथी --- हा हा हा हाथी

हाथी --- हा हा हा हाथी "[36]

यह गीत हास्य और व्यंग्य से परिपूर्ण हैं। मंच के तीनों ओर बटकर अंधे खड़े होते हैं और गाने लगते हैं, नाचने लगते हैं। उपर्युक्त गीत का उत्तरार्ध यह अंतीम गीत है जिसमें हाथी को वशीभूत करने के लिए अंधे बैचेन हो उठे हैं ओर पाँचो अंधे धीमे-धीमे गोल-गोल घूमते हैं और गीत गाते हैं।

"हाथी .... हा हा हा हाथी

हाथी ..... हा हा हा हाथी"[37]

इसमें संदेह नहीं कि दोनों नाटकों में जिन कोरस और अन्य गीतों का प्रयोग किया गया है जिससे मुख्यतया आज की राजनीति का पर्दाफाश किया गया है ओर नेताओं की आलोचना भी की गयी हैं। नृत्य, गाने में पात्रों की अभिनेयता को भी स्थान मिला है। विशेषतः चार अंधे और एक अंधी का गाना, नाचना विशेष उल्लेखनीय है।

मंचीयतत्व :-

नाटक और साहित्य की अन्य विधाओं में मुख्य अंतर यह है कि नाटक में मंचीयता को प्रधानता दी जाती है। रंगमंच नाटक का प्राणतत्व है। रंगमंच के बारे में कुँअरजी अग्रवाल का कथन उल्लेखनीय है - "नाटक की रचना का मूल उद्देश्य उसकी रंगमंचीय प्रस्तुति है। नाटककार नाटक इसलिए नहीं लिखता कि वह सीधे पाठकों का श्रोतओं तक पहुँचे । नाटककार और ग्राहक के बीच रंगमंच के नाट्यकर्मी (अभिनेता, संगीतकार, निर्देशक) होते हैं। ये नाट्यकर्मी दर्शकों की उपस्थिति में लिखित नाटक का अभिनीत रूप प्रस्तुत करते हैं। यह प्रस्तुति ही नाट्य है।"[38]

मंचीय तत्व के अंतर्गत मुख्यतया दृश्यबंध, अभिनय, प्रकाश योजना, ध्वनि और संगीत तथा दर्शकीय, पाठकीय संवेदनाएँ आदि का अंतर्भाव होता है।

दृश्य विधान :-

"एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक दो अंकों में और तीन मुख्य दृश्यों - 1)बाजार, 2) कोतवाल का घर और, 3) नवाब का दरबार - में विभाजित हैं।

नाटक के प्रथम अंक का प्रथम दृश्य "बाजार" है। इस दृश्य में नवाब के साथ कोतवाल, चिंतक और दरबारी भी होते हैं ये सब नवाब के प्रशंसक रहे हैं और नवाबी भी आत्मस्तुति के लोभी रहे हैं। नवाब के राज में जनता सुखी और शांत नहीं है। इस पर व्यंग्य किया गया है। इस दृश्य में नवाब की आत्मस्तुति पर करारा व्यंग्य किया गया है। प्रथम अंक का दूसरा दृश्य "कोतवाल का घर" है। इस दृश्य में यह दिखाया गया है कि कोतवाल अपनी प्रेयसी रामकली के साथ ही अपना अधिक समय गवाता है और अपने कर्तव्य से विमुख रहता है। दृश्य तीन "बाजार" का है। इस दृश्य में देवीलाल पानवाला, नत्थू, दर्जी, चार नागारेक मुख्यतया कोतवाल के "फोकट खाने" पर, विलासीवृत्ति पर और कर्तव्यसे विमुखता पर आपस की चर्चा में अपना गुस्सा व्यक्त करते हैं। दृश्य चार "दरबार का है ओर इसमें मुख्यतया चिंतक - 1 , 2., और 3 के बेकार चिंतन पर और स्वार्थी वृत्ति पर व्यंग्य किया है। ये चिंतक नवाब की चापलसी करने में और अपना उल्लू सीधा करने में हमेशा आगे रहते हैं। अपवादभूत चिंतक तीन कुछ मात्रा में नवाब के विचारों पर अपनी असहमति प्रकट करने पर अपने प्राण खो देता है। नवाब के दरबार में नवाब का मुख्य राजनीतिक सूत्र है आम आदमी को बेवकूफ बनाये रखना ।

प्रस्तुत नाटक के दूसरे अंक का दृश्य एक "बाजार" का है। इस में मुख्यतया अलादाद खाँ साहब के गुजर जाने से उसकी यादगार में उसका स्मारक बनाने का विचार नवाब व्यक्त करते हैं। दुकाने बंद कर देने की घोषणा की जाती है। और चिंतक 1 और 2 नवाब को यह बताते हैं कि मरा हुआ अलादाद खाँ आदमी नहीं गधा है। "अलादाद खाँ" गधे का भी नाम है। आकाशवाणी से ऐलान किया जाता है कि अलादाद खाँ की शवयात्रा में नवाब उसे कंधा

देने वाले हैं। कुछ समय बाद देवीलालपानवाला के यहाँ अलादाद खाँ आदमी आ जाता है और कोतवाल उसे पकड़ लेता है और नवाब के पास ले जाता है। यहाँ बाजार का दृश्य समाप्त होता है और नवाब के दरबार का दृश्य दिखाया जाता है। अपनी प्रतिष्ठा के लिए और नाम कमाने की कोशिश में शरीफ अलादाद खाँ नामक आदमी को मार डालने का आदेश नवाब देते हैं और बेचारा अलादाद खाँ अपने प्राण गंवाता है। अलादाद की शवयात्रा आरंभ होती है। फिर बाजार का दृश्य दिखाया जाता है। आकाशवाणी से आँखों देखा हाल सुनाया जाता है। नवाब साहब अलादाद खाँ नामक शरीफ व्यक्ति के मर जाने पर श्रध्दांजलि अर्पित करते है और बाजार की ओर से जानेवाली सड़क का नाम "अलादाद खाँ मार्ग" घोषित करते हैं। दरबारी, चिंतक आदि सब नवाब के सलानत में चारों ओर अमन है कहते हैं और बीच में जुग्गन धोबी जोर से चीखता है " अलादाद, अलादाद "चीख सुनकर नवाब साहब पूछते हैं"ये कौन है।" तब नत्थू कहता है, "हुजूर, यह जुग्गन है। जबसे इसका अलादाद गुजर गया कोई सहारा नहीं रहा इसका। तब से रो-रोकर जान दे रहा है।"[39] नवाब जुग्गन को पाँच हजार रूपये की थैली देकर उसकी तकलीफ को दूर करते हैं। नाटक के अंत में नवाब, दरबारी सब फ्रीज हो जाते हैं और कोतवाल और रामकली पुनश्च एक-दूसरे के प्रेमा-पाश में बंधे जाते हैं। और रामकली नृत्य करने लगती है। शोर शराबे के साथ नाटक समाप्त होता है। दृश्य परिवर्तन के लिये नाटककार ने तख्ती काप्रयोग किया है।

"अंधों का हाथी" नाटक में कोई अंक विभाजन या दृश्य विभाजन नहीं है। नाटक एक बार शुरू होने पर अंत तक चलता ही रहता है। अंक विभाजन और दृश्य विभाजन की इस नाटक की एक विशेषता मंच की दृष्टि से यह है कि नाटककार के रंग संकेत के अनुसार इस नाटक का मंच संज्जाविहीन मंच है।[40] पूरे नाटक में पाँच अंधे और एक सूत्रधार के माध्यम से मुख्यतया आज की राजनीति की कलई खोल दी है। और राजनीति पर करार व्यंग्य किया गया है। अंक विहीन और दृश्य विहीन नाटक साठोत्तर नवीन नाट्यतंत्र की खासियत है।

अभिनेतया :–

नाटक रंगमंच पर खेला जाता है। नाटक में पात्रों का अभिनय इसलिए महत्त्व रखता है कि वह दर्शकों को प्रभावित करता है नाट्याचार्य भरतमुनि के अनुसार पारंपारिक रूप में अभिनय के चार प्रकार माने गये हैं – कायिक, वाचिक, आहार्य, सात्विक । लेकिन महत्त्वपूर्ण बात यह है कि अभिनय के समय ये भेद अलग–अलग न होकर एकत्रित रूप में ही प्रदर्शित होते हैं। नाट्यप्रस्तुति में पात्रों का अभिनय नाटक की जान है। शरद जोशी के दो व्यंग्य नाटकों – "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ", "अंधों का हाथी " में अभिनय को काफी स्थान मिला है। नाटकों में प्रारंभ से अंत तक अभिनय के स्थल दिखाई देते हैं। कुछ महत्त्वपूर्ण अभिनयों का विवेचन यहाँ किया जा सकता है जो व्यंग्य और हास्यानिर्मिति में सहायक हुए है।

"एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ :–

नवाब का बाजार में आगमन :–

प्रस्तुत नाटक में प्रारंभ में नवाब के आगमन का उल्लेख किया गया है। कोरस गीत के द्वारा नवाब के बाजार में आगमन का उल्लेख महत्वपूर्ण है। इस समय नवाब छडी घुमाता किसी फोटोग्राफर को पोज दे रहे हैं और उनके साथ चिंतक फोटो में आने की चेष्टा करते हुए अलग–अलग कोण से भिन्न–भिन्न मुद्राओं में नवाब के पास खड़े होते हैं ओर प्रेक्षक हास्य रस में लोट–पोट हो जाते हैं। उस समय दरबारी और शेष दरबारी नवाब की स्तुति करते हुए हास्य–निर्मिति में और रंग भरते हैं। निम्नांकित वार्तालाप देखिए –

"दरबारी – 1 : नवाब की सल्तनत में चारों तरफ अमन है।

शेष दरबारी : नवाब की सल्तनत में चारों तरफ अमन है।"[41]

कोतवाल और रामकली का रोमान्स :–

नाटक के पहले अंक के दूसरे दृश्य में कोतवाल के घर में कोतवाल और उसकी प्रेमिका रामकली का रोमान्स बड़ा ही व्यंग्यपूर्ण है। कोतवाल अपनी ड्युटी को छोडकर छह घंटों तक रामकली के साथ रोमान्स करता रहता है। फिर भी रामकली को ऐसा लगता है कि वह पलभर भी उसके साथ नहीं गुजर रहा है। इतना ही नहीं जब कोतवाल ड्युटी पर जाने की

सोचता है तब रामकली उसे रोकने का प्रयास करती है। और दोनों में प्यार के बारे में भी बातचीत होती है। निम्नलिखित संवाद देखिए–

"कोतवाल : नौकरी है रामकली, नौकरी ।

रामकली : राख डालो ऐसी नौकरी पर । हमारी जवानी तुम्हारा इंतजार करते बीत जायेगी क्या ?

कोतवाल : हम पिछले छह घण्टों से तुम्हारे साथ हैं।

रामकली : झूठ क्यों बोलते हो । पल भर भी तो नहीं बीता ।

कोतवाल : हाय रामकली !

रामकली : प्यारे कोतवाल !

कोतवाल : हमें दुनिया में दो ही चीजें प्यारी हैं।

रामकली : जानती हूँ ।

कोतवाल : एक तुम्हारी काली आँखें ।

रामकली : दूसरा शहर पुलिस का थाना ।

कोतवाल : रिटायर होने के बाद हम सिर्फ तुम्हारी बाहों में रहेंगे।

रामकली : हमें गौरमेंट की यही बात तो नापसन्द है। मर्द को रिटायर करना ही है तो जवानी में करे।"[42]

इस वार्तालाप के समय कोतवाल अपनी प्रेमिका रामकली के साथ मंच पर पैर नचाता दिखाई देता है। यह रोमान्स निश्चित ही व्यंग्य और हास्य पूर्ण है।

चिंतकों का "समय" चिंतन :–

प्रस्तुत नाटक में कुल तीन चिंतक हैं जो नवाब को सलाह देने में सहायता करते हैं। वास्तव में वे स्वार्थी हैं और नवाब की चापलूसी करते–करते किसी चिंतन पर आ जाते हैं। समय पट किया गया चिंतकों का चिंतन कितना बातूनी है इसका परिचय निम्नलिखित वार्तालाप तथा उनकी भाव मुद्राओं में नजर आता है।

"चिंतक – 1 : क्या हम यहाँ समय से पहले आ गये?

चिंतक – 2 : नहीं । समय यहाँ हमारे पहले आ गया होगा ।

चिंतक – 3 : मुझे कहीं–न–कहीं ऐसे लगता है और हो सकता है मैं ठीक भी हूँ कि समय और हम यानी हम और समय साथ–साथ ही आये हैं।

चिंतक – 2 : यह कैसे हो सकता है? जब हम यहाँ नहीं थे तब क्या यहाँ समय नहीं था।

चिंतक – 1 : यदि था भी तो इस बात की क्या गवाही कि था ?

चिंतक – 2 : समय रहता है। वह तो वहाँ भी रहता है जहाँ कोई नहीं रहता। क्या चाँद पर समय नहीं होता?"[43]

नवाब का आश्वासन और चिंतकों का नोट करना :–=

"एक था गधा उर्फ अलादाद ख़ाँ" नाटक का नवाब जितने आत्मप्रशंसक हैं उतने ही आश्वासन की घोषणा करने में तत्पर हैं। साथ ही साथ अपने विचार नोट करने के लिए चिंतकों को विवश करते हैं। यह नवाब चिंतकों से कहते हैं कि हम तुम्हारी पगार बढ़ा देंगे। फेलोशिप दिलवा देंगे और तुम (चिंतक) ठाट–बाट से खाते रहो। क्यों कि तुम बहुत अच्छा सोच लेते हो। उस समय तीनों चिंतक एक साथ जोर से कहते है "हुजूर की इनायत है।" इस समय "वक्त" पर विचार व्यक्त करते समय नवाब चिंतकों से कहते हैं कि वक्त पर मैंने जो विचार व्यक्त किये हैं उनको नोट करो क्योंकि इसका उपयोग तालिमयाफ्ता लोगों को पढ़ने के लिए अच्छी किताब मिल जाय। इस समय नवाब की घोषणा से चिंतको का आनंदित होना और नोट करने का प्रसंग बड़ा ही मार्मिक है।

चिंतक तीन की हत्या :–

नाटक के प्रथम अंक के अंत में यह दर्शाया है कि चिंतक 1 और 2 गंभीर साहित्यिक चर्चा में खो गये हैं। उस समय दरबारी नवाब के और उसके राज्य के गुणगान गा रहे हैं और कह रहे हैं कि नवाब के राज्य में सब सुखी हैं। सब अमन से हैं। और चारों ओर कानून का पहारा है। इतने में कोतवाल खुली तलवार ले मंच से गुजरता है। रस्सी से बाँधा

चिंतक – 3 धीरे–धरी सीर झुकाये उसके पीछे चला जाता है। चारों दरबारी उसके पीछे दो–दो की कतार में चले जाते हैं। आचरज की बात यह है कि बौध्दिक चर्चा में लीन, चिंतक 1 ओर चिंतक 2 उसकी ओर नहीं देखते हैं। नेपथ्य में चले जाने पर चिंतक – 3 की हत्या की जाती है। इस प्रकार नाटककार ने नवाब के राज्य की पोल खोल दी है।

नवाब का क्रोध और रामकली का नृत्य :–

जब नवाब को चिंतक – 1 और 2 से मालूम हो जाता है कि मरनेवाला अलादाद खाँ आदमी नहीं गधा है तब नवाब खबर देनेवाले कोतवाल पर अपना गुस्सा प्रकट करते हैं। नवाब मंच पर पैर पटकते हैं और कोतवाल को हाजिर करने के लिए कहकर चले जाते है। उस सयम चिंतक 1 और 2 मंच की भिन्न दिशाओं में मुँह कर कोतवाल को उपास्थित करने का निर्देश देते हैं। नेपथ्य से कई स्वर सुनायी देते हैं। कोतवाल हाजिर किया जाये, कोतवाल हाजिर किया जाये। चिंतक-1 ओर चिंतक-2 चिन्तियाये हुए मंच से चले जाते हैं। सूत्रधार आकर मंच से कुर्सी हटा देता है और रामकली नृत्य करने लगती है। कोतवाल उसके नृत्य को भिन्न कोणों से और अत्यन्त मुग्ध भाव से देखता, चारों ओर घूमता रहता है। रामकली नृत्य द्वारा कोतवाल को रिझा रही है। तभी कोरस के सदस्य नंगी तलवारें लिये आते हैं और कोतवाल से कुछ कहकर चुप खड़े हो जाते हैं। कोतवाल घबरा जाता है। वह बेल्ट बाँधता है, नृत्य में डूबी रामकली से साफा माँगता है। नहीं मिलने पर खुद यहाँ–वहाँ देख अन्दर जा कहीं से साफा ढूँढ लाता है और पहन लेता है। रामकली नृत्य करती रहती है। इसी बीच सूत्रधार नवाब की कुर्सी रख देता है। नंगी तलवारें लिये कोरस के सदस्य नवाब की कुर्सी के पीछे खड़े हो जाते हैं। नवाब आते हैं। रामकली फ्रीज हो जाती है। कोतवाल नवाब को सेल्यूट करता है। नवाब तार की भाषा में आदेश देते हैं।[44] ये सारी घटनायें ऐसी है कि नवाब के राज्य में नवाब, कोतवाल, नागरिक क्या कर हरे हैं इसका पता चलता हैं। अपनी–अपनी डफली, अपना – अपना राज कहावत यहाँ सार्थक हो जाती है।

अलादाद खाँ : गधा या आदमी ?

शरद जोशी के इस नाटक में व्यंग्य और हास्य निर्मिति का केंद्रीय स्थल अलादाद खाँ है। जब जुग्गन धोबी अपने अलादाद खाँ नामक गधे की अचानक मृत्यु पर शोक करता है, रोने लगता है, तब किसी को यहपता नहीं चलता हैं कि सचमुच कौन मरा है? गधा या आदमी? जुग्गन का यह रोना–धोना उसके ही शब्दों में मंच पर सुना और देखा जा सकता है – "अलादाद .... ओ अलादाद खाँ .. कहाँ चले गये प्यारे भाई मुझे छोड़कर ? अब इस दुनिया में हमारा कौन है, अलादाद, यह सोचा तुमने ? नहीं सोचा। नहीं सोचा, अलादाद, तुमने जाने के पहले कुछ नहीं सोचा। अलादा... द।"[45] बाद में जुग्गन सूत्रधार को बता देता है "गधा था, मगर रिश्तेदारों से ज्यादा करीब था। मेरे लिए तो कलेजे का टुकड़ा था। नूरे–नजर, दिल का दुलारा... ओ अलादाद !"[46]

अलादाद खाँ की हत्या और शवयात्रा :–

नवाब एक ऐसे नेता हैं जो प्रजा को हमेशा उल्लू बनाने के प्रयास में रहते हैं। जब उन्हें यह मालूम हो जाता है कि अलादाद खाँ नामक गधा मर चुका है तब वे एक दूसरी तरकीब सोचने लगते हैं और आखिर उसमें कामयाब होते हैं। अलादाद खाँ नामक शरीफ आदमी और कोतवाल की भेंट बाजार में देवीलाल पानवाले की दुकान पर होती हैं। कोतवाल भी वहाँ आ जाता है और अलादाद खाँ को नवाब के दरबार में ले जाता है। नवाब उसकी स्तुति करते हैं और उसके पास उसकी मौत की माँग करते हैं। तब अलादाद खाँ अपनी पूरी जानकारी नवाब को देता है और नवाब को भी ऐसा लगता है कि यह शरीफ आदमी होकर भी गधा है। उसकी हत्या करने से नवाब का अलादाद खाँ के शव को कंधा देना और शवयात्रा में शामिल होना – यह इच्छा पूरी हो सकती है। इसलिए कोतवाल के साथ बातचीत कर नवाब आदमी अलादाद खाँ की हत्या करवाते हैं यह हत्या नेपथ्य में की जाती है। और लोग अलादाद खाँ की चीत्कार सुनते हैं। "कोई बचाओ .. अरे मुझे कोई बचाओ।"[47] लेकिन अलादाद खाँ को कोई भी नहीं बचा सकता है। सब लोग अलादाद खाँ की लंबी दर्दनाक कराह सुनते हैं। इस समय नवाब चिंतकों से सिगरेट लेते हैं, दोनो चिंतक, नवाब की सिगरेट जलाने में मदद करते

हैं, चिंतक अंदर से जा ताबूत लाते हैं। फिर अलादाद के शव को ला ताबूत में रखते हैं, कफन डालते है, सजाते है। कोतवाल इस काम में मदद करता है। जब तक यह क्रिया चलती है, नेपथ्य से कोरस के स्वर सुनायी देते हैं। कोरस –

"अलादाद ओ अलादाद ।
दुनिया को तुम छोड़
कहाँ चले गये ?
अलादाद ।"[48]

अलादाद खाँ की शव–यात्रा आरम्भ होती है। इस शवयात्रा में सबके आगे नवाब और कोतवाल होते हैं। पीछे बुध्दिजीवी, चार नागरिक मिलकर अलादाद खाँ का जनाजा उठाते हैं। आगे बढ़ते हैं। मंच पर बाजार का दृश्य उभरने लगता है। नत्थू दर्जी, जुग्गन धोबी, देवीलाल, नागरिक-गण दरबारी सब आ जाते हैं। और सूत्रधार आँखों देखा हाल सुना रहा है। मैं जहाँ तक देख रहा हूँ मुझे बहुत बड़ी संख्या में लोग दिखायी दे रहे हैं। अपने प्यारे, आदरणीय अलादाद खाँ साहब को अंतिम विदाई देने के लिए, बहुत बड़ी संख्या में लोग एकत्र हुए हैं। नवाब साहब खुद शासन के सभी लोगों के साथ जनाजे के साथ हैं और वे खुद जनाजे को कंधा दे रहे हैं.. मैं देख रहा हूँ।"[49] जनाजा गुजर जाने के बाद मंच पर खामोशी नजर आती है। सब लोग सिर झुकाये फ्रिज खड़े हैं। नवाब मंच पर आ जाते हैं। साथ में कोतवाल और चिंतक भी होते हैं। नवाब अलादाद खाँ को मंचपर श्रध्दांजली अर्पित करते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि आदमी अलादाद खाँ की हत्या, उसका जनाजा, जनाजे को नवाब का कंधा देना फिर कुछ समय बाद श्रध्दांजली अर्पित करना । ये ऐसे प्रसंग हैं जो रंगमंच और अभिनेतया के लिए और व्यंग्य निर्मिति के लिए विशेष सहायक हुए हैं। वस्तुतः यह सारा का सारा प्रसंग आज की राजनीतिक उलटी चाल का जीता जागता चित्र है। नाट्यतत्व की दृष्टि से, वस्तुविन्यास की दृष्टि से यहाँ क्लाईमैक्स है और श्रध्दांजली के बाद जुग्गन का चीख कर रोना और नवाब का पाँच हजार रूपये का नकद मुआवजा देना और सब फ्रीज हो जाने के बाद मंच पर रामकली और कोतवाल का आगमन तथा रामकली का नृत्य एंटीक्लाईमैक्स है।

अंधों का हाथी :-

सूत्रधार का प्राक्कथन :-

"एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक की भाँति "अंधों का हाथी" भी एक मौलिक व्यंग्य नाटक है जिसमें अभिनय के लिए काफी गुंजाइश है। सूत्रधार, चार अंधे ओर एक अंधी, कुल छह पात्रों के कार्यव्यापार पर अभिनय के कुछ स्थल दिखाई देते हैं। नाटक सज्जाविहीन मंच से युक्त है। नाटक के प्रारंभ में सूत्रधार का प्राक्कथन संस्था में अंदर-अंदर चलनेवाली बड़ी पोलटिक्स का परिचय देता है और इस एकालाप में नाटक का कथाबीज उभर आता है। सूत्रधार कहता है, "पाँच अंधे नहीं, चार अंधे और एक अंधी । नाटक में थोड़ा रस भी रहना चाहिए न । चाहे नाटक में हाथी न दिखे, लड़की जरूर दिखनी चाहिए।"[50] यहाँ से इस नाटक में व्यंग्य और हास्यनिर्मिति का प्रारंभ होता है।

हिंदी रंगमंच की हालत :-

इस नाटक में मंच पर चार अंधे और एक अंधी रंगमंच के बारे में सोच-विचार करते हैं। उस समय किसी को मंच की प्रतीति होती है। कोई मंच के बारे में सोचता है कि यहाँ मंच है तो कोई सोचता है नहीं। नाटककार ने चार अंधे और अंधी की मनोदशा का जो मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है और व्यंग्य निर्मिति की है उस संबंधी कुछ पंक्तियाँ देखिए -

"अंधा - 1 : क्या हम वहाँ आ गये जहाँ हमें आना था ?

अंधा - 2 : लगता तो कुछ ऐसा ही है।

अंधा - 3 : (लकड़ी मंच पर ठोककर)
क्या यही मंच है?

अंधा - 4 3 इतना खालीपन, ऐसा सुनसान और कहाँ होगा ? मुझे लगता है मंच यही है।
(यहाँ - वहाँ बिखरकर बैठने लगते हैं।)

अंधी - : मंच हो या न हो, मुझे यहाँ अच्छा लग रहा है।

अंधा - 2 : तेरे साथ अक्सर ऐसा ही होता है।

अंधा – 1 : नहीं, शायद यह मंच नहीं है। तालियों की गड़गड़ाहट नहीं, स्वागत नहीं, फूलमाला नहीं, जनता नहीं। कुछ भी तो नहीं हैं यहाँ। मैंने तो मंच के विषय में बड़ी–बड़ी बातें सुन रखी थीं।"[51]

हाथी के प्रति उत्सुकता :–

सूत्रधार के नेपथ्य में चले जाने पर चार अंधे और अंधी हाथी के स्वरूप के बारे में सोचती रहती हैं और हाथी को देखने के लिए उत्सुक , हैं। उनकी ये उन्मुखता और विसंगति वाचिक अभिनय में मुख्यतया दिखाई पड़ती है।

"अंधी : हाथी की तो एक भी रिहर्सल नहीं करायी, सीधे मंच पर उतर रहे हैं और हमसे रोज रोज रिहर्सल ।

अंधा – 4 : नन्हा सा प्राणी है, थक न जाता बार–बार रिहर्सल करते ।

अंधा – 3 : और कहीं बहुत खतरनाक प्राणी हुआ तब?

अंधा – 2 : नहीं–नहीं, कहते हैं बड़ा सीधा है बिचारा ।

अंधा – 1 : मगर डरने की क्या बात है। आखिर हम पाँच हैं।

अंधी : लड़ाई–झगड़ो में मुझे मत गिनना ।

अंधा – 4 : मेरा डर कुछ और था। कहीं वह हाथी हमारे पैरों के नीचे दब गया तो?[52]

इसमें संदेह नहीं कि इस वार्तालाप में हाथी के स्वरूप को जानने की उत्सुकता के साथ ही साथ अंधों की मनोदशा का और उनके विसंगतिपूर्ण जीवन का बोध दर्शकों एवं पाठकों को सहज ही हो जाता है। इस व्यंग्य निर्मिति में हास्य के साथ रूदन भी अनुस्यूत है।

हाथी की समस्या :–

नाटककार ने नाटक के प्रारंभ में हाथी की समस्या पर भी प्रकाश डालने की कोशिश की है। जब चार अंधे आपस में मतभेदपूर्ण बहस करते हैं तब अंधी उन्हें शांत रहने की सूचना करती है और कहती है हमारी समस्या क्या है? तब चारों अंधे एक साथ कहते हैं "हाथी" ।

"अंधा – 1
अंधा – 2
अंधा – 3
अंधा – 4
} हाथी ।

अंधा – 1 : हमारी समस्या ?

अंधा – 2
अंधा – 3
अंधा – 4 .
} हाथी ।[53]

विशेष बात यह है कि अंधा – 2, अंधा – 3 ओर अंधा – 4 एक साथ "हाथी हाथी हाथी" कहकर तीन बार दोहराते हैं जिसे सुनकर और देखकर दर्शक भी हँसने लगते हैं।

मंच पर हाथी ? ——— नहीं ।

मंच पर पाँच अंधे "हाथी ..... हा हा हा हाथी" गीत गाते हैं। और उन्हें ऐसा लगता है कि मंच पर हाथी प्रस्तुत हुआ है। इसलिए हाथी को जानने की उनकी उत्सुकता बढ जाती है और प्रत्येक अंधे की मनोदशा व्यक्त होती है। चारों अंधे और अंधी वास्तव में सुविधा-भोगी जीवन बीताने की अभिलाषा व्यक्त करते हैं जिसमें प्यार है, उत्कंठा है, स्मोकिंग है और ड्रीकिंग भी है। निम्नलिखित वार्तालाप देखिए –

"सूत्रधार : हाजिरान, साहबान, कदरदान, हाथी हाजिर है।

अंधी : कहाँ है हाथी। लाओ मुझे दो। मैं उसे गोद में लूँगी। बहुत–बहुत प्यार करूँगी । कहाँ है हाथी ?

अंधा – 1 : हाथी बेटे, हमारे पास आओ । जल्दी आओ दौड़कर राजा बेटे की तरह । पुच ... ।

अंधा – 4 : हाथी भाई एक नजर इधर भी प्यारे, कब से तुम्हारी आस लगाये बैठे हैं हैं जालिम ।

अंधा – 2 : अबे ओ हाथी के बच्चे, चल इधर आ ।

अंधा – 3 : चलो छोडो । अभी–अभी तो आया है गरीब । जरा सुस्ता लेने दो बिचारे को। अब ऐसा भी व्या, कोई भागे थोड़े जाता है। है ना सूत्रधारजी ।

अंधा – 1 : डू यू स्मोक हाथी ?

अंधा – 4 : वुड यू लाई इट नीट आर विदा सोडा आर आईस आर समथिंग ....।

अंधी : कमान, गिव मी एन बिग–बिग किस हाथी । मू ... मू ... मू... मू... ।[54]

वास्तव में मंच पर हाथी नहीं होता है। सूत्रधार "हाजिरान, साहबान, कदरदान हाथी हाजिर है कहकर अंधों में हाथी के उपस्थिति का संभ्रम निर्माण करता है। और दर्शक भी हँसने लगते हैं।

<u>हाथी हटाओ आंदोलन</u> :–

नाटक में जैसे हाथी की समस्या को उपस्थित किया गया है उसी प्रकार हाथी को हटाने का प्रयास भी चलता रहता है। यद्यपि हाथी मंच पर नहीं है फिर भी अंधों को ऐसा लगता है कि वह हाथी मंच उपस्थित है। सूत्रधार का अंधों के खिलाफ भड़कानेवाला भाषण समाचार पत्र में छप जाने पर सब अंधे सूत्रधार के खिलाफ जाते हैं। और जिस सूत्रधार ने हाथी की समस्या उपस्थित करने की कोशिश की उस हाथी को ही हटाने की "हाथी हटाओ" आंदोलन को ही उजागर करते हैं।

अंधा – 1 : क्या, है तुम्हारे पास कोई हल ?

अंधा – 3 : हमारा नारा होना चाहिए, हाथी हटाओ ।

अंधा – 1 : चढ़ गयी तुमको शायद आज ।

अंधी : ये ऐसा ही करते हैं। दो पेग में आऊट हो जाते हैं।

अंधा – 3 : कमजोर है।

अंधा - 3 : एक नारा सबका ध्यान नहीं खीचं लेगा । हाथी हटाओ ।

अंधा – 2 : हाथी हटाओ ।"[55]

इतनाही नहीं अंधा – 1 सूत्रधार को "गेट–आऊट" कह देता है और अंधी तो और सोचती है और कहती है , कोई मेरा हाथ पकड हाथी के पास ले चलो।56

हाथी संबंधी विभिन्न तरीके :-

"अंधों का हाथी" नाटक में अंधे हाथी के बारे में अपनी–अपनी सोच व्यक्त करते हैं। मंच पर हाथी न होने पर भी प्रत्येक अंधे को हाथी अलग अलग प्रतित होता है। अंधा – 1 को ऐसा लगता है कि हाथी "दीवार" की तरह है। अंधा – 2 को ऐसा लगता है कि हाथी "सूप" की तरह है। अंधा – 3 को हाथी "साप" या अजगर की तरह लगता है। अंधा – 4 को हाथी "रस्सी" की तरह लगता है।[57] लेकिन इस आरोप–प्रत्यारोप में अंधी बहुत दुखी होती है और वह कहती है कि समस्या का विश्लेषण करनेवाले राष्ट्र की प्रतिभाओं को (चार अंधों की प्रतिभा) इस तरह छिन्न–भिन्न होते नहीं देख सकती। वह घुटनों के बल बैठकर अंधों से निवेदन करती है, "जो राष्ट्र के अंधों, किसी एक निर्णय पर पहुँचो । हाथी क्या है, कैसा है, इस पर अंधों के अलग–अलग विचार कैसे हो सकते हैं यदि हाथी एक ही है, वही है।[58] अपने निवेदन के बाद अंधी मंच पर धीरे–धीरे घुटनों के बल घिसटती–सी अंधों की ओर हाथ से टटोलती हुई बढ़ती है ओर तभी उसके हाथ सहसा रूक जाते है। अंधी को मानो हाथी का एक पैर मिल जाता है। वह कहती है यह क्या ? क्या यह हाथी है। हाँ, वही, वही तो होगा। इस तरह हम देखते हैं कि जहाँ आँखो वाले लोगों को हाथी रूपी समस्या नहीं दिखाई देती है और वे उसका हल नहीं कर सकते हैं तो मंच पर उपस्थित चार अंधे और एक अंधी हाथी को कैसे देख सकते हैं? उसकी समस्या को कैसे हल कर सकते हैं ? नाटककार ने चार अंधे और एक अंधी के माध्यम से आज के आँखों वाले राजनीतिक नेताओं पर ही व्यंग्य किया है। हाथी समस्या का प्रतीक है।

सूत्रधार की मौत और पुनः उपस्थिति :-

नाटक के अंत में यह दिखाया गया है कि हाथी की समस्या से चारों अंधे सूत्रधार को अपना शत्रु मानते हैं ओर उसे मार डालते हैं। निम्नलिखित वार्तालाप देखिए –

"अंधी : हाथी तो यही लेकर अया था।

अंधा – 1 : हमारा शत्रु तू है। तू है हमारा शुत्र

अंधा – 3 : हर प्रश्न उठानेवाला हमारा शत्रु है।

अंधा – 4 : मारो, मारो, साले को।

अंधा – 2 : मारो, मारो, मारो ।

अंधा – 3 : लाठ, टीअरगैस, गोली । फायर... फायर ।

अंधा – 1 : मारो, मारो ।[59]

सब मिलकर सूत्रधार पर प्रहार करते हैं। सूत्रधार गिर जाता है। पाँच अंधें सूत्रधार की शरीर की ओर घृणा से देखते हैं। फिर अंधी मंच के अग्रभाग में आती है। शेष अंधे दुखी और संतप्त चेहरे से सूत्रधार की चारों ओर खड़े हो जाते हैं।[60] वास्तव में इसमें मनोशारीरिक अभिनय की गुंजाइश है। अंत में दर्शकों को संबोधित करते हुये सूत्रधार को श्रध्दांजली अर्पित करती है। सब अंधे दो मिनट मौन रहते हैं और तत्पश्चात बड़ी प्रसन्नता से नाचते ठुमकने लगते हैं। हाथी का गीत "हाथी .... हा हा हा हाथी" समवेत स्वर में गाते और नाचने लगते हैं और मंच से चले जाते हैं। इतने में सूत्रधार उठता है और कहता है, "मैं मरा नहीं हूँ। कैसे मरूँगा ? सूत्रधार जो हूँ। यदि मर गया तो कल मंच पर हाथी लेकर कोन आयेगा ? और कल ही नहीं, आनेवाले अनंत वर्षो तक यह काम मुझे ही करना है। अंधे बार–बार मुझे मारेंगे, में बार बार जन्म लूँगा, अच्छा, नमस्कार । और आइए ।"[61]

प्रकाश योजना :–

नाटक सामूहिक कला है। अतः दृश्यविधान और अभिनेतया के अतिरिक्त प्रकाश योजना का भी महत्वपूर्ण स्थान नाट्य प्रस्तुति में है। रंगमंच पर अभिनेता, अभिनेत्रियाँ आदि जो अभिनय करते हैं उनको अधिक परिपोषक दिखाने के लिए प्रकाश व्यवस्था का आयोजन किया जाता है। सामान्यतया प्रकाश का उपयोग नाटक के उठते गिरते व्यापार को रेखांकित करने, बल देने, वातावरण की सृष्टि करने और छोटे–छोटे अंतरिम तथा अंतिम चरण–बिंदुओं को निर्मित करने और दृष्टिकेंद्र में स्थिर रखने के लिए महत्वपूर्ण समझा जाता है।[62] शरद जोशी के दो व्यंग्य नाटक "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" और "अंधों का हाथी" में नाटककार ने प्रकाश योजना के बारे में कोई रंगसंकेत नहीं दिया है। यह बात निर्देशक पर छोड़ दी गयी है। "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक दो अंकों और कई दृश्यों में विभाजित हैं।

दृश्यपरिवर्तन के लिए अंध:कार और प्रकाश का उपयोग इस नाटक में नहीं किया गया है। दृश्य परिवर्तन के लिए तख्ती का उपयोग किया जाता है। नवाब का सिगरेट जलाने के प्रसंग का दो बार रंगसंकेत दिया गया है। तथापि इस नाटक में कुछ ऐसे अभिनेयस्थल हैं जिनको अधिक प्रभावी दर्शाने के लिए प्रकाशयोजना का उपयोग किया जा सकता है। नाटक में कोरसगीत, रामकली का नृत्य, नवाब के बीच-बीच में होने वाले भाषण, श्रध्दांजली, उद्घोषक का आँखों देखा हाल संबंधी घोषणानुमा भाषण आदि प्रसंगों के लिए नीले, पीले, हरे, रंगों के स्पाटलाईट का आयोजन किया जा सकत है। "अंधों का हाथी" नाटक में भी प्रकाश योजना संबंधी रंगसंकेत का उल्लेख नहीं है। सूत्रधार का प्रारंभिक एकालाप, सूत्रधार के आगमन पर पाँचों अंधों का नमस्ते, नमस्ते कहकर खड़े हो जाना, पाँचों अंधें का मिलकर समवेत स्वर में गाना और नाचना और नाटक के अंत में सूत्रधार का विस्तृत बयान तथा सूत्रधार को पाँचों अंधों दूवारा मार डालना, उसको श्रध्दांजली अर्पित करना, सब अंधों का मंच से चले जाना और फिर सूत्रधार का जीवित हो उठना आदि प्रसंगों को प्रभावी ढ़ंग से दिखाने के लिए प्रकाश योजना का उपयोग किया जा सकता है। आजकल आधुनिक प्रकाश यंत्रों का उपयोग मंचपर किया जाता है। प्रकाश के आधुनिक उपकरणों में पेर्जेट, सोलर, बेबी लाईट डिमर, फ्लडलाईट आदि का इस्तेमाल किया जाता है।[63] दोनों नाटकों में इन उपकरणों का भी प्रयोग किया जा सकता है।

<u>ध्वनि और संगीत</u> :-

वातावरण निर्मिति और प्रभावान्विति की दृष्टि से ध्वनि और संगीत का भी प्रयोग नाट्यप्रस्तुति में अपेक्षित है। नाटककार शरद जोशी ने ध्वनि और संगीत संबंधी कुछ रंगसंकेत अपने दोनों नाटकों में दिए हैं। "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में नाटक के प्रारंभ में नवाब साहब के बाजार में आगमन के समय बिगुल बजाना, नवाब का परंपरा के बारे में लंबा भाषण देना और उसको सुनकर दरबारी, चिंतक आदि का तालियाँ बजाना, माइक पर उद्घोषक का नेपथ्य से शवयात्रा संबंधी घोषणा करना, आँखों देखा हाल सुनाना, जुग्गन धोबी का गधे की मौतपर रोना-धोना, शरीफ अलादाद खाँ नामक आदमी की नेपथ्य में हत्या करते समय उसकी लंबी दर्दनाक कराह और नाटक के अंत में रामकली के नृत्य के समय जुग्गन, नत्थू,

देवीलाल, सूत्रधार, चारों नागरिक आदि का सीटियाँ बजाना, शोर–शराबा करना ध्वाने–संगीत की दृष्टि से उल्लेखनीय प्रसंग हैं। रामकली के नृत्य के समय कॅामेडी म्युझिक का प्रयोग किया जा सकता है। कोरस गीतों में प्रासंगिक कॅामेडी और त्रासदी युक्त संगीत का प्रयोग अपेक्षित है।

"अंधों का हाथी" नाटक में "अंधे हम हैं अंधे" और "हाथी हा हा हा हाथी" गीतों में प्रासंगिक संगीत का प्रयोग किया जा सकता है। नाटक के अंत में हाथी हा हा हा हाथी में क्रूर आनंद की अभिव्यक्ति के लिए विशिष्ट संगीत अपेक्षित है। नाटक के प्रारंभ में सूत्रधार के एकालाप में आरोह–अवरोह स्वर का उल्लेख ध्वनि और संगीत की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। अंधों द्वारा सूत्रधार को मंच पर मार डालते समय मार–पीट की आवाज तथा कारूणिक संगीत अपेक्षित हैं। सूत्रधार के मरने पर उसको श्रध्दांजली अर्पित करते समय कारूणिक संगीत की योजना की जा सकती है।

"एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" में कोरस गीतों के प्रयोग में और "अंधों का हाथी" नाटक में दो सामूहिक गीतों के प्रयोगों में लोकधुन और लोकवाद्यों का प्रयोग विशेष प्रभाव निर्मिति में सहायक हो सकता है।

<u>दर्शकीय, पाठकीय संवेदनाएँ</u> :–

नाटक दृश्यकाव्य है। दृश्यकाव्य होने से वह रंगमंच पर खेला जाता है और उसे देखने के लिए जो जन समूह प्रेक्षागृह में बैठता है और नाटक का आनंद लुटता है उसे प्रेक्षक या दर्शक की संज्ञा दी जाती है। नाटक और दर्शक के परस्पर प्रभाव को डॅाक्टर चंदूलाल दुबे ने इस प्रकार संकेतित किया है – "नाटक और दर्शक अन्योन्याश्रित हैं। नाटक देखने के लिए दर्शक आते हैं। दर्शकों के लिए नाटक खेले जाते हैं। दर्शकों के अभाव में नाटक का प्रदर्शन असंभव है। नाटक दर्शकों पर अपना प्रभाव डालता है तो दर्शक भी नाटक को प्रभावित करते हैं। नाटक की कथावस्तु संगीत एवं अभिनय से सहृदय दर्शक प्रभावित होता है।"[64]

नाटककार शरद जोशी ने अपने दोनों नाटकों पर अपनी और अपने मित्रों की संवेदनाएँ व्यक्त की हैं। "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" पर की गयी संवेदनाएँ इस प्रकार है –

शरद जोशी के शब्दों में – "कलकत्ता में "अनामिका" द्वारा अयोजित एक शिबिर में मैंने "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" पढ़कर सुनाया तो सभी रंगकर्मी मित्रों ने इसे पसन्द किया। "अनामिका" ने श्री विमल लाठ के निर्देशन में इसके लगातार कई महीनों तक प्रदर्शन किये। श्री.सत्यदेव दुबे को सन्देह था कि नाटक की कथा बहुत "थिन" होने के कारण इसका मंचन सफल नहीं होगा। विमल और दुबे में शर्त लगी थी इस बात पर। विमल जीता।"[65] कलकत्ता के अतिरिक्त बम्बई, रायपुर और दिल्ली में इस नाटक के कई प्रदर्शन हो चुके हैं।

"अंधों का हाथी" नाटक के बारे में शरद जोशी की राय इस प्रकार है – "मैंने "अंधों का हाथी" लिखा और सारे रंगकर्मी मित्रों को उसकी सायक्लोस्टाइल प्रतियाँ भेज दीं। विमल लाठ, बजाज और सत्यदेव दुबे ने खेलने के निर्णय लिये, पर वे परिस्थितियों–वश खेल नहीं पाये। इसी बीच लखनऊ, उज्जैन, भोपाल, दिल्ली, इन्दौर, कानपुर, बड़ोदा, बम्बई आदि की रंग संस्थाओं ने इसके कई–कई प्रदर्शन किये। भोपाल में राजेन्द्र गुप्त की रिहर्सलों और प्रदर्शनों को मैंने देखा और नाटक को समझने–सुधारने में मुझे मदद मिली। (नाटक के अन्त में सूत्रधार का बयान राजेन्द्र गुप्त ने नहीं रखा था।)"[66]

<u>डॉ.जयदेव तनेजा</u>

विख्यात नाट्यसमीक्षक डॉ.जयदेव तनेजा की दोनों नाटकों के बारे में निम्नलिखित संवेदनाएँ हैं – "अंधों का हाथी" नाटक में कार्यव्यापार अथवा पात्रों के वैविध्य के स्थान पर रोचक संवादों तथा (निर्देशकीय दृष्टि से) दिलचस्प संयोजनों के माध्यम से दर्शक को आकर्षित करने की अधिक गुंजाइश है। भाषा बोलचाल की है और संवादों में तीखी व्यंग्यात्मकता है।"[67] वे आगे कहते हैं – "सत्ता, प्रशासन और न्याय–व्यवस्था की व्यापक मूल्यांधता को प्रस्तुत करने के लिए पहले नाटक (अंधों का हाथी) में पात्रों को अंधा बनाकर तथा दूसरे नाटक (एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ) में गधे ओर आदमी को गड़डमड्ड करके "ये अंधा शहर है, अंधा शहर" की स्पष्ट घोषणा हमें भारतेन्दु के नाटक "अंधेर नगरी" की याद दिलाती है।"[68] अंत में वे कहते हैं – "यह सही है कि एक था गधा के प्रदर्शनों से इसकी कथाक्षीणता तथा गधे और आदमी की ग़लतफ़हमी के अत्याधिक खींचे जाने की कमजोरी का तीखा एहसास दर्शक को

होता है, और कहीं – कहीं सपाट बयानी तथा शब्द–बहुलता भी प्रबुध्द पाठक प्रेक्षक को क्षुब्ध करती है।"[69]

पाठकीय संवेदना की दृष्टि से हम यह कह सकते हैं कि शरद जोशी के दोनों नाटक आज की राजनीतिक और सामाजिक विसंगति को उजागर करने में और पाठकों के मन में हास्यनिर्मिति करने में कामयाब हुये हैं। रंगमंच की दृष्टि से दोनों नाटकों की सफलता निश्चय ही साठोत्तर हिंदी नाटकों की विशिष्ट उपलब्धि है।

निष्कर्ष :–

उपर्युक्त विवेचन के आधारपर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि –

1. शरद जोशी के विवेच्य दोनों नाटकों में शिल्पतत्व और मंचीय तत्व का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। व्यंग्यनिर्मिति में ये दोनों प्रमुख तत्व सहायक सिध्द हुए हैं।
2. नाटक में प्रयुक्त संवादों में उलजलूल संवाद, पात्र–समूह संवाद, शब्द युग्म संवाद तथा दरबारी भाषा, गालीगलौच भाषा, कैफियत की भाषा, आकाशवाणी की भाषा, सरकारी पत्र और तार की भाषा व्यंग्य निर्मिति में विशेष सहायक तथ्य हैं।
3. दोनों नाटकों में पशु–प्रतीकों का प्रयोग सटीक और सार्थक है। पशु–प्रतीकों के साथ–साथ स्त्री–पुरूष पात्रों की प्रतीकात्मकता आज की राजनीतिक और सामाजिक विसंगति को दर्शाती है।
4. नाटककार द्वारा प्रस्तुत आत्मकथनशैली, इतिवृत्तात्मकशैली, चित्रात्मक शैली, सूक्ति शैली, संबोधन शैली और श्रध्दांजली आदि का प्रयोग मनोज्ञ है।
5. दोनों नाटकों में प्रयुक्त कोरस गीत और समूह गीत व्यंग्य और हास्यनिर्मिति के लिए सहायक हुए हैं। आज की राजनीति और समाजनीति का पर्दाफाश करने में ये गीत सार्थक बन गए हैं।

6. रंगमंच की दृष्टि से दोनों नाटक सफल बन गए हैं।

7. तख्ती के द्वारा दृश्यपरिवर्तन का प्रयोग "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक की खासियत है।

8. दोनों नाटकों में व्यंग्य–निर्मिति में पात्रों के अभिनय के विविध स्थल विशेष सहायक हुए हैं।

9. संक्षेप में दोनों विवेच्य नाटकों का शिल्प और मंचीय विधा अपने आप में परिपूर्ण और पाठकों, दर्शकों, समीक्षकों आदि पर प्रभाव डालने में सक्षम हैं। व्यंग्य निर्मिति में ये तत्व विशेष सहायक सिध्द हुए हैं।

संदर्भ :-

1. दो व्यंग्य नाटक – "अंधों का हाथी" – शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, पृ.97, 98
2. वही, पृ.99
3. दो व्यंग्य नाटक – 'एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" – शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, पृ.45
4. दो व्यंग्य नाटक – "अंधों का हाथी" – शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, पृ.89
5. दो व्यंग्य नाटक – "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" –शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, पृ.14
6. वही, पृ.25
7. वही, पृ.46
8. दो व्यंग्य नाटक – "अंधों का हाथी"– शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, पृ.120
9. वही, पृ.84
10. दो व्यंग्य नाटक – "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" – शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, पृ. 20-21
11. व्यंग्य क्या व्यंग्य क्यों – श्यामसुन्दर घोष, संस्क.1996, पृ.120
12. दो व्यंग्य नाटक – "अंधों का हाथी" शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, पृ.108
13. दो व्यंग्य नाटक – "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" – शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, पृ.67
14. वही, पृ.70
15. वही, पृ.62–63
16. वही, पृ.63
17. दो व्यंग्य नाटक – "अंधों का हाथी"– शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, पृ.91
18. दो व्यंग्य नाटक – "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ", शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, पृ.60

19. दो व्यंग्य नाटक – "अंधों का हाथी" शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, पृ.95–96

20. दो व्यंग्य नाटक – "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, पृ.31

21. दो व्यंग्य नाटक – "अंधों का हाथी" – शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, पृ.86

22. दो व्यंग्य नाटक – "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ"– शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, पृ.66

23. वही, पृ.34

24. वही, पृ.29

25. वही, पृ.72

26. दो व्यंग्य नाटक – 'अंधों का हाथी"– शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, पृ.89

27. दो व्यंग्य नाटक – "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ"– शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, पृ.74

28. दो व्यंग्य नाटक – "अंधों का हाथी" – शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, पृ.98

29. दो व्यंग्य नाटक – "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" – शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, पृ.22

30. वही, पृ.74

31. दो व्यंग्य नाटक – "अंधों का हाथी" –शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, पृ.120

31–अ. दो व्यंग्य नाटक – शरद जोशी , प्र.संस्क.1994, "अपनी बात", पृ.7

32. दो व्यंग्य नाटक – "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" – शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, पृ.27

33. वही,पृ.56–57

34. वही, पृ.73

35. दो व्यंग्य नाटक – "अंधों का हाथी", – शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, पृ.86

36. वही, पृ.94–95

37. वही, पृ.102–103

38 नाट्य और नाटक – कुँवरजी अग्रवाल, प्र.संस्क. 1990, पृ.9

39. दो व्यंग्य नाटक – 'एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" – शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, पृ.75

40. दो व्यंग्य नाटक – "अंधों का हाथी" –शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, पृ.89

41. दो व्यंग्य नाटक – "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, पृ.12

42. वही, पृ.28–29

43. वहीं, पृ.37

44. वही, पृ.59–60

45. वहीं, पृ.22

46. वही, पृ.27

47. वही, पृ.72

48. वहीं, पृ.73

49. वही, पृ.73

50. दो व्यंग्य नाटक – "अंधों का हाथी" –शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, पृ.80

51. वही, पृ.81

52. वहीं, पृ.85

53. वहीं, पृ.88

54. वही, पृ.95–96

55. वहीं, पृ.100

56. वहीं, पृ.102

57. वहीं, पृ.109

53. वहीं, पृ.110

59. वहीं, पृ.119

60. वहीं, पृ.119

61. वहीं, पृ.120

62. नाटक और रंगमंच – संपा.डॉ.शिवराम माली, डॉ.सुधारक गोकाकर, प्र.संस्क.1979, पृ.220 (मंचीय प्रकाश योजना : स्वरूप और विकास – डॉ.विश्वनाथ शर्मा का लेख)

63. हिंदी रंगमंच का उद्‌भव और विकास – डॉ. विश्वनाथ शर्मा, प्र.संस्क.1979, पृ.38

64. नाटक और रंगमंच, संपा. डॉ.शिवराम माली, डॉ.सुधाकर गोकाककर, प्र.संस्क.1979, पृ.244 (नाटक और दर्शक – डा.चंदूलाल दुबे का लेख)

65. दो व्यंग्य नाटक – शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, अपनी बात, पृ.6

66. वही, पृ.6

67. नई रंग चेतना और हिंदी नाटककार – जयदेव तनेजा, प्र.संस्क.1994, पृ.165

68. वहीं, पृ.167

69. वही, पृ.167–168